INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

ममता कालिया की कहानियों में स्त्री अस्मिता और महानगरीय तनाव

पृथ्वी राज, पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. कुलदीप गोपाल शर्मा, सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान

सारांश

ममता कालिया हिंदी की उन लेखिकाओं में अग्रणी हैं जिन्होंने स्त्री जीवन की जटिलताओं और सामाजिक असमानताओं को अपने लेखन का केंद्र बनाया। उनकी कहानियों में स्त्री अस्मिता का संघर्ष और महानगरीय जीवन के तनावपूर्ण अनुभव मुखर होकर सामने आते हैं। यह शोध–पत्र उनकी कहानियों के माध्यम से आधुनिक स्त्री की पहचान, आत्म–सम्मान, सामाजिक–पारिवारिक द्वंद्व और महानगरीय जीवन की विसंगतियों का समीक्षात्मक विश्लेषण करता है।

प्रस्तावना

ममता कालिया का कथा साहित्य विशेषतः उन महिलाओं की कहानियाँ कहता है जो बदलते सामाजिक परिवेश में अपनी पहचान की तलाश में हैं। महानगर केवल भौगोलिक स्थान नहीं बल्कि एक मनोस्थितियों का समूह है जहाँ स्वतंत्रता और संघर्ष साथ–साथ चलते हैं। ममता कालिया की कहानियों में स्त्रियाँ न तो पूर्णतः परंपरा की पोषक हैं और न ही अंधाधुंध आधुनिकता की। उनका संघर्ष एक संतुलन तलाशने का प्रयास है कृ जो अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई है।

साहित्य समीक्षा

वंदना तिवारी (2016) के अनुसार, ममता कालिया की कहानियाँ स्त्री की पहचान और अस्मिता के संघर्ष को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अपने लेख में यह स्पष्ट किया है कि ममता कालिया की नायिकाएँ पारंपरिक स्त्री भूमिकाओं को केवल निभाती नहीं हैं, बल्कि उनसे सवाल भी करती हैं। लेख में तिवारी ने दिखाया है कि इन कहानियों की स्त्रियाँ आत्ममंथन और आत्मस्वीकृति की प्रक्रिया से गुजरती हैं, जो उन्हें एक नई चेतना और सशक्तिकरण की ओर ले जाती है। तिवारी का यह भी मत है कि ममता कालिया का लेखन केवल विद्रोह या विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्त्री की भीतर की आवाज़ को भी शब्द देता है। उनके अनुसार, लेखिका की भाषा, पात्रों की सोच और कथानक की बुनावट समकालीन नारी विमर्श को मजबूती प्रदान करते हैं। तिवारी का यह अध्ययन ममता कालिया की स्त्री–पात्रों के आत्मसंघर्ष और आत्म–निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

किरण नागर (2018) ने अपने शोध आलेख कथा साहित्य में स्त्री मन का विश्लेषण में स्त्री पात्रों के आंतरिक भाव–जगत और मानसिक संघर्षों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि समकालीन हिंदी कथा साहित्य, विशेष रूप से महिला लेखकों की रचनाओं में स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्ष को जिस संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ चित्रित किया गया है, वह उल्लेखनीय है। नागर का यह भी मत है कि इन कहानियों में स्त्री केवल सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह नहीं करती, बल्कि वह अपनी भावनाओं, इच्छाओं और अस्मिता की खोज में भी संलग्न रहती है। उन्होंने विशेष रूप से यह रेखांकित किया है कि स्त्री पात्रों के मानसिक द्वंद्व, आत्मसंघर्ष, और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया उन्हें केवल सहनशील नहीं बल्कि आत्मनिर्भर भी बनाती है। उनका यह विश्लेषण ममता कालिया जैसी लेखिकाओं की कहानियों को समझने में सहायक है, जहाँ नारी मन के सूक्ष्म स्पंदनों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

रजनी सेन (2019) ने अपने शोध लेख महानगरीय तनाव और स्त्री मानसिकता में यह स्पष्ट किया है कि महानगरीय जीवन की आपाधापी, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव स्त्रियों की मानसिकता पर गहरा प्रभाव डालते हैं। उन्होंने अपने अध्ययन में दिखाया है कि शहरी जीवन में स्त्रियाँ केवल पारिवारिक और सामाजिक भूमिकाओं को निभाने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, पहचान और मानसिक शांति के लिए निरंतर संघर्षरत हैं। सेन के अनुसार, महानगरों की तेज़ रफ्तार और कृत्रिम संबंधों के बीच स्त्री एकाकीपन, असुरक्षा और अस्तित्व संकट से जूझती है, जो उसकी सोच, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करता है। लेख में यह भी कहा गया है कि साहित्य में स्त्री पात्रों के माध्यम से इन मानसिक दबावों को बड़ी संजीदगी से उकेरा गया है, खासकर ममता कालिया जैसे लेखकों की रचनाओं में। रजनी सेन का यह विश्लेषण शहरी स्त्री जीवन की यथार्थवादी समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

नेहा चौहान (2021) ने अपने लेख स्त्री केंद्रित लेखन की सामाजिक पृष्ठभूमि में यह स्पष्ट किया है कि स्त्री लेखन केवल भावनात्मक या व्यक्तिगत अनुभवों का प्रकटन नहीं है, बल्कि यह समाज की संरचना, उसकी अपेक्षाओं और स्त्रियों पर थोपे गए दायित्वों के विरुद्ध एक विचारधारात्मक हस्तक्षेप भी है। चौहान

के अनुसार, स्त्री केंद्रित साहित्य सामाजिक असमानताओं, लैंगिक भेदभाव और पारिवारिक दबावों के बीच स्त्रियों की चेतना और प्रतिरोध को उजागर करता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि समकालीन लेखिकाएँ, विशेषकर ममता कालिया, अपने लेखन के माध्यम से स्त्रियों के अनुभवों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो उन्हें केवल सहनशील प्राणी नहीं बल्कि जुझारू, सोचने–विचारने वाली स्वतंत्र इकाइयाँ बनाकर सामने लाती हैं। नेहा चौहान का यह अध्ययन बताता है कि स्त्री लेखन की सामाजिक पृष्ठभूमि को समझे बिना उसकी संवेदना और गहराई को पूरी तरह नहीं जाना जा सकता।

उद्देश्य

ममता कालिया की कहानियों में स्त्री पात्रों के आत्मबोध और अस्मिता के संघर्ष का विश्लेषण करना।
महानगरीय जीवन में स्त्री के मानसिक, सामाजिक और आर्थिक संघर्षों को पहचानना।
नारीवाद के दृष्टिकोण से ममता कालिया की कहानियों की समीक्षा करना।

अनुसंधान पद्धति

शोध का स्वरूप एवं प्रकार

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक है, जिसमें ममता कालिया की कहानियों का साहित्यिक विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में लेखक की रचनाओं में स्त्री अस्मिता एवं महानगरीय तनाव के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है। शोध में प्राथमिक रूप से कथानकों, पात्रों, संवादों एवं प्रतीकों का विश्लेषण किया गया है ताकि स्त्री जीवन की जटिलताओं और सामाजिक–सांस्कृतिक दबावों का सम्यक चित्र प्रस्तुत किया जा सके। साथ ही, नारीवादी आलोचना के सिद्धांतों को भी इस शोध में शामिल किया गया है, जिससे स्त्री पात्रों की स्वायत्तता, संघर्ष और पहचान की प्रक्रिया का समग्र अवलोकन संभव हो। यह शोध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह महानगरीय जीवन में स्त्री की स्थिति और मानसिक तनाव को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

साहित्य संग्रह के स्रोत

इस शोध के लिए मुख्य साहित्य के रूप में ममता कालिया की कहानियों का चयन किया गया है, जो स्त्री अस्मिता और महानगरीय तनाव के विषय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। कहानियों के चयन में उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक गहराई को ध्यान में रखा गया है। प्राथमिक स्रोतों में ममता कालिया के प्रकाशित कहानी संग्रह, जैसे काली साड़ी, बोलने वाली औरत, और लौटना नहीं है शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, शोध में विभिन्न शोध पत्र, आलोचनात्मक लेख, और हिंदी नारीवादी विमर्श से संबंधित पुस्तकों का भी सहारा लिया गया है। माध्यमिक स्रोतों के रूप में शोध पत्रिकाएँ, ऑनलाइन डेटाबेस, और साहित्यिक आलोचना से जुड़े ग्रंथों का उपयोग किया गया, जिनसे कहानियों के विभिन्न पहलुओं की व्यापक समझ विकसित हो सके। इस प्रकार, साहित्य संग्रह में प्राथमिक और माध्यमिक दोनों ही स्रोतों का समुचित समावेश किया गया है ताकि शोध की गहराई और प्रामाणिकता बनी रहे।

अध्ययन की सीमा और विस्तार

इस शोध में ममता कालिया की चुनिंदा कहानियों को अध्ययन के लिए चुना गया है, जो स्त्री अस्मिता और महानगरीय तनाव के विषय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं। विशेष रूप से काली साड़ी, बोलने वाली औरत, और लौटना नहीं है जैसी कहानियों का समावेश किया गया है, जिनमें नारी के आत्मसम्मान, सामाजिक दबावों और शहरी जीवन की चुनौतियों को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। शोध का फोकस मुख्य रूप से स्त्री के मानसिक संघर्ष, पारिवारिक एवं सामाजिक अपेक्षाओं, और महानगरीय जीवन में उत्पन्न तनावों पर केंद्रित है। अध्ययन की सीमा इस प्रकार सीमित है कि यह केवल ममता कालिया की कहानियों तक ही सीमित रहेगा तथा अन्य महिला कथाकारों के कार्यों को इस शोध में सम्मिलित नहीं किया गया है। इसके अलावा, शोध का विश्लेषण गुणात्मक होगा, जिसमें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और नारीवादी दृष्टिकोणों पर अधिक बल दिया जाएगा।

विश्लेषणात्मक उपकरण एवं तकनीक

इस शोध में ममता कालिया की कहानियों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न विश्लेषणात्मक उपकरण और तकनीकों का प्रयोग किया गया है। मुख्यतः नारीवादी आलोचना के सिद्धांतों का उपयोग किया गया है, जिससे स्त्री पात्रों की अस्मिता, स्वतंत्रता और सामाजिक संघर्षों को गहराई से समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, सामाजिक–सांस्कृतिक विश्लेषण के माध्यम से महानगरीय परिवेश और उसके दबावों का प्रभाव भी परखा गया है, जो कथानक और पात्रों के व्यवहार में स्पष्ट रूप से झलकता है। पात्र मनोविज्ञान की तकनीक से पात्रों के मानसिक द्वंद्व, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और उनकी मनोदशा का भी सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है। इन उपकरणों के समन्वय से शोध में स्त्री जीवन के जटिल पहलुओं को बहुआयामी दृष्टि से समझने का प्रयास किया गया है, जिससे पाठक को कहानियों की गहनता और व्यापकता का

सही आभास हो सके।

शोध प्रक्रिया का क्रम

इस शोध कार्य की प्रक्रिया क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से संचालित की गई है। सबसे पहले, ममता कालिया की कहानियों का चयन कर साहित्य संग्रह किया गया। इसके बाद, चयनित कहानियों का गहन अध्ययन और पुनःपठन किया गया ताकि उनकी विषयवस्तु, पात्र, एवं सामाजिक संदर्भ स्पष्ट रूप से समझे जा सकें। अध्ययन के दौरान महत्वपूर्ण बिंदुओं और विचारों का नोटिंग की गई, जिससे शोध के लिए आवश्यक डेटा व्यवस्थित रूप से एकत्रित हो सके। तत्पश्चात, विषयों के आधार पर थीमेटिक विश्लेषण किया गया, जिसमें कहानियों में निहित स्त्री अस्मिता, महानगरीय तनाव, और मनोवैज्ञानिक संघर्ष जैसे प्रमुख विषयों की पहचान कर उनकी विवेचना की गई। अंत में, सभी प्राप्त निष्कर्षों का समेकन कर शोध के उद्देश्य के अनुरूप व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया गया।

शोध की विश्वसनीयता और वैधता

इस शोध की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए कई सावधानीपूर्वक उपाय अपनाए गए हैं। प्राथमिक रूप से, ममता कालिया की कहानियों का चयन सावधानी से किया गया है ताकि अध्ययन के लिए प्रासंगिक और प्रभावशाली सामग्री उपलब्ध हो। शोध में प्रयुक्त सभी स्रोतों की प्रामाणिकता और अधिकारिता की जांच की गई है। साथ ही, विभिन्न माध्यमिक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं की तुलना और साक्ष्य द्वारा पुष्टि की गई है, जिससे निष्कर्षों की सत्यता बढ़े। गुणात्मक विश्लेषण के दौरान व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से बचने के लिए निष्पक्ष और तटस्थ दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसके अतिरिक्त, शोध में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक तकनीकों की उपयुक्तता और प्रमाणिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे शोध के निष्कर्ष वैज्ञानिक और अकादमिक स्तर पर विश्वसनीय माने जा सकें। इस प्रकार, शोध कार्य में निष्कर्षों की वैधता और प्रामाणिकता के लिए समुचित कदम उठाए गए हैं।

डेटा विश्लेषण

कथानक में स्त्री अस्मिता का विवेचन

ममता कालिया की कहानियों में स्त्री अस्मिता को एक सशक्त और जागरूक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाएँ नारी के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान के संघर्ष की झलक देती हैं। कहानियों के पात्र सामाजिक और पारिवारिक बंधनों से जूझती महिलाओं की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को बखूबी दर्शाते हैं। महानगरीय जीवन के दबावों और अपेक्षाओं के बीच स्त्रियों की अपनी आवाज़ को स्थापित करने की इच्छा, उनकी आंतरिक लड़ाई और आत्म–प्रतिकृति की खोज ममता कालिया के कथानक की मुख्य विषयवस्तु है। इन कहानियों में स्त्री पात्र न केवल अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं, बल्कि अपने अस्तित्व को नई दिशा देने का साहस भी दिखाती हैं। इस प्रकार, ममता कालिया की कहानियाँ स्त्री अस्मिता की विविधता और उसकी गहराई को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती हैं।

महानगरीय जीवन में स्त्री तनाव की झलक

ममता कालिया की कहानियों में महानगरीय जीवन की जटिलताएं और उसके कारण उत्पन्न स्त्री तनाव को गहराई से दर्शाया गया है। शहरी जीवन की तीव्र गति, सामाजिक अपेक्षाएं, और पारिवारिक जिम्मेदारियों का दायित्व महिलाओं के मानसिक और भावनात्मक दबाव को बढ़ाता है। ये तनाव न केवल उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर प्रभाव डालते हैं, बल्कि उनकी पहचान और आत्मसम्मान को भी चुनौती देते हैं। महानगर में स्त्री के लिए अपनी जगह बनाना, परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाना और साथ ही अपने सपनों को जीवित रखना कठिन हो जाता है। ममता कालिया की कहानियों में इस तनाव की विविध अवस्थाएंकृजैसे अकेलापन, असहायता, और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व–स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती हैं। इस प्रकार, शहरी जीवन के दबावों के कारण महिलाओं में उत्पन्न तनाव और उसके प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण उनकी रचनाओं का एक प्रमुख पहलू है।

पात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्ष

ममता कालिया की कहानियों में पात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्षों का बारीकी से चित्रण किया गया है। उनकी कहानियों की नायिकाएँ अक्सर आंतरिक द्वंद्व और बाहरी सामाजिक दबावों के बीच जूझती हुई दिखाई देती हैं। ये पात्र पारिवारिक जिम्मेदारियों, सामाजिक मान्यताओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच उलझन में होते हैं, जिससे उनकी मानसिक स्थिति जटिल हो जाती है। महानगरीय परिवेश की तंगाहट और अपेक्षाओं के कारण नारी पात्रों के संघर्ष और भी तीव्र हो जाते हैं। इनके मनोवैज्ञानिक तनाव, असमंजस और भावनात्मक विषमताएँ उनकी कहानियों में प्रमुख विषय बन जाती हैं। सामाजिक सीमाएं और रूढ़िवादिता इन पात्रों की आज़ादी और आत्म–साक्षात्कार में बाधा उत्पन्न करती हैं, जिससे उनका आंतरिक संघर्ष और भी गहरा हो जाता है। इस प्रकार, ममता कालिया ने अपने पात्रों के माध्यम से

मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और सामाजिक संघर्षों को संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया है।

संवाद और प्रतीकात्मकता का विश्लेषण

ममता कालिया की कहानियों में संवाद और प्रतीकात्मकता का विशेष महत्व है, जो कथानक की गहराई और भावों को प्रभावशाली बनाते हैं। उनकी भाषा सहज, स्पष्ट और सजीव होती है, जो पात्रों की मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती है। संवादों के माध्यम से पात्रों के आंतरिक संघर्ष, उनके विचार और भावनाएँ सहजता से व्यक्त होती हैं। इसके अतिरिक्त, कहानियों में प्रयुक्त प्रतीक जैसे काली साड़ी, घर, दरवाज़ा आदि वस्तुएं और छवियां गहन अर्थ लिए होती हैं, जो स्त्री अस्मिता और सामाजिक बंधनों का सूचक होती हैं। ये प्रतीक न केवल कथानक को समृद्ध करते हैं, बल्कि पाठक को कहानियों के विषय और संदर्भ से जोड़ने का काम करते हैं। इस प्रकार, ममता कालिया की कहानियों में भाषा, संवाद और प्रतीकात्मकता का समन्वय कथानक को प्रभावी और अभिव्यक्तिपूर्ण बनाता है।

नारीवादी दृष्टिकोण से कहानियों का पुनरावलोकन

ममता कालिया की कहानियों का नारीवादी दृष्टिकोण से पुनरावलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि वे स्त्री जीवन की जटिलताओं, उनकी पीड़ा, और संघर्षों को मुखरता से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ महिलाओं की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक दमन, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सीमाओं पर प्रकाश डालती हैं। नारीवादी विमर्श के आधार पर यह अध्ययन दिखाता है कि ममता कालिया की रचनाएँ महिलाओं की आत्म–स्वीकृति, आत्मसम्मान और समाज में बराबरी के अधिकारों के पक्षधर हैं। वे अपने पात्रों के माध्यम से महिलाओं को पारंपरिक रूढ़ियों से बाहर निकालकर उनकी मानसिक आज़ादी और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। इन कहानियों में नारी की आवाज़ को दबाए जाने का विरोध, उनके संघर्ष और उनकी नयी पहचान की खोज प्रमुख विषय हैं, जो नारीवादी विचारधारा के अनुकूल हैं। इस प्रकार, ममता कालिया की कहानियाँ नारीवादी आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रखती हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन

ममता कालिया की कहानियों में सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का गहन अध्ययन किया गया है, जो पात्रों के व्यवहार और कथा की दिशा दोनों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। महानगरीय परिवेश की तेजी से बदलती जीवनशैली, पारंपरिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच का संघर्ष पात्रों की मानसिकता और उनकी प्रतिक्रियाओं में झलकता है। समाज की रूढ़िवादिता, लिंग आधारित भेदभाव, और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्म–अभिव्यक्ति में बाधक साबित होती हैं। इन कहानियों में समाज के दबावों और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण पात्रों को कई बार अपने स्वाभाविक स्वप्नों और इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। साथ ही, महानगर की भीड़–भाड़, असमानताएँ और अकेलापन भी पात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार, ममता कालिया की कहानियों में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण पात्रों के संघर्षों और कथा के विकास को समझने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

ममता कालिया की कहानियाँ केवल स्त्रियों की कहानियाँ नहीं हैं, वे उस समाज का आईना हैं जहाँ स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में परंपरा और आधुनिकता के बीच झूलती रहती है। महानगरीय जीवन ने उसे अवसर दिए हैं, लेकिन उसी के साथ नए प्रकार के मानसिक और सामाजिक तनाव भी। इन कहानियों में स्त्री की आवाज है, उसकी चुप्पी भी है, और सबसे महत्वपूर्णकृउसका संघर्ष है।

संदर्भ

1. कालिया, ममता. (2012). लौटना नहीं है. वाणी प्रकाशन
2. तिवारी, वंदना. (2016). ममता कालिया की कहानियों में स्त्री की पहचान. नारी विमर्श शोधपत्रिका, 5(2), 35–41।
3. वर्मा, शुभ्रा. (2018). समकालीन कहानी में नारी अस्मिता की अवधारणा. भारती साहित्य समीक्षा, 7(3), 50–57।
4. शर्मा, रेखा. (2019). महानगरीय परिवेश में स्त्री जीवन का संघर्ष. आधुनिक विमर्श, 4(1), 22–30।
5. पांडेय, सुरेखा. (2020). ममता कालिया की कहानियाँरू नारीवादी दृष्टिकोण. हिंदी आलोचना, 8(2), 42–49
6. सिंह, अलका. (2017). हिंदी साहित्य में महिला लेखन की दिशा. कथा समीक्षा, 6(1), 15–21
7. चौधरी, मीनाक्षी. (2021). स्त्री विमर्श और मध्यवर्गीय स्त्री. साहित्य चिंतन, 3(2), 12–18।
8. त्रिपाठी, रश्मि. (2020). बोलने वाली औरतः संवादहीनता की त्रासदी. नव लेखन, 2(4), 25–31।
9. झा, ललिता. (2015). ममता कालिया की कहानियों में नारी अस्मिता. हिंदी नारी दृष्टिकोण, 9(3), 30–37।

10. अग्रवाल, पूनम. (2016). समकालीन महिला लेखन में मानसिक संघर्ष. नारी जागरण, 5(1), 18–25
11. सक्सेना, विभा. (2022). महानगर और स्त्रीरू एक द्वंद्व. शोध विमर्श, 11(2), 44–50।
12. मिश्रा, एकता. (2018). आधुनिक हिंदी कहानी और स्त्री अस्मिता. साहित्य संवाद, 3(3), 55–61।
13. जोशी, नीतू. (2019). स्त्री चेतना और आत्मनिर्भरता. कथादेश, 7(1), 26–32
14. कुमार, आनंदी. (2021). हिंदी कथा साहित्य में स्त्री की बदलती छवि. साहित्य अभिव्यक्ति, 9(4), 39–46
15. राजपूत, गरिमा. (2017). ममता कालिया के कथा–साहित्य में नारीवाद. सृजन विमर्श, 6(2), 20–28।
16. शुक्ला, अंजली. (2016). महिला लेखन में आत्मविवेचन की प्रवृत्ति. लेखिका, 5(3), 15–22।
17. ठाकुर, सविता. (2022). स्त्री अस्मिता और कहानी कला. हिंदी शोधसंगम, 8(2), 33–39
18. नागर, किरण. (2018). कथा साहित्य में स्त्री मन का विश्लेषण. विमर्शिका, 6(1), 29–35
19. सेन, रजनी. (2019). महानगरीय तनाव और स्त्री मानसिकता. कथा विमर्श, 3(2), 41–47।
20. चौहान, नेहा. (2021). स्त्री केंद्रित लेखन की सामाजिक पृष्ठभूमि. हिंदी जगत, 10(3), 17–24
21. सिंह, माधुरी. (2020). हिंदी महिला लेखन में अनुभव की विविधता. स्त्री दृष्टिकोण, 2(2), 36–43।